ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-7* October-2020
Anthology : The Research

महात्मा गांधी के आश्रमों का अध्ययन

Study of Mahatma Gandhi's Ashrams

Paper Submission: 12/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

श्याम सुन्दर
शोध छात्र,
इतिहास विभाग,
मड़ियाहूँ पी0जी0 कालेज,
मड़ियाहूँ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में गाँधी जी के आश्रमों का बहुआयामी सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। इन आश्रमों के माध्यम से गाँधी जी ने किस तरह दक्षिण अफ्रीका और भारत में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों में जागरूकता फैलाकर लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव लाने को प्रयास किया है। गाँधी आश्रम किस तरह परम्परागत आश्रमों से भिन्न है तथा उनके द्वारा विभिन्न स्थानों पर स्थापित आश्रमों में किये गये विभिन्न रचनात्मक प्रयोगों को समग्रता से शामिल करते हुए उन पर विचार किया गया है।

Gandhiji's ashrams have been studied in a multidimensional context in the presented research paper. Through these ashrams, how Gandhiji tried to bring a big change in people's lives by spreading awareness in social, economic and political fields in South Africa and India. How Gandhi Ashram is different from the traditional ashrams and considering various constructive experiments conducted in the ashrams established by them at various places, has been considered in totaly.

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी, दक्षिण अफ्रीका, सत्य, अहिंसा, इंडियन ओपिनियन, फोनिक्स आश्रम, टॉलस्टाय फार्म, सेवाग्राम आश्रम, साबरमती आश्रम, सेवा श्रम आश्रम, सामुदायिक।

Mahatma Gandhi, South Africa, Satya Ahimsa, Indian Opinion, Phoenix Ashram, Tolstoy Farm, Sevagram Ashram, Sabarmati Ashram, Seva Shram Ashram, Community

प्रस्तावना

कहा जाता है कि जहाँ सन्त रहते हैं वहीं आश्रम होता है पर ऐसी बात नहीं है। सन्त तो पर्वत की गुफाओं में एकान्त कुटियाओं में और खुले जंगलों में भी रहते हैं, लेकिन जहां सन्त के साधक अपनी साधना अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु करते हैं उसे भी आश्रम कहते हैं। आश्रम के अपने उद्देश्यों के साथ कुछ नियम भी होते हैं। इसी भावना से ओत–प्रोत दिखाई देते हैं गाँधी जी द्वारा स्थापित आश्रम। आश्रम व्यवस्था आदिकाल से ही भारतीय सनातन संस्कृति का प्रमुख अंग रही है। भारतीय संस्कृति में जीवन की सम्पूर्ण यात्रा को ही चार आश्रमों में बांटा गया है। गांधी जी के इसी पारस्परिक सामुदायिक सहयोग की संस्कृति में यह पाठ सीखा कि ''हमें न केवल मनुष्यता के लिए जीना है, परन्तु हमें मनुष्यता में जीना है।''

गांधी जी द्वारा स्थापित आश्रम ऐसी प्रयोगशालायें थे जहां वे और उनके सहयोगी जीवन पद्वति के एक विकल्प के रूप में अहिंसा के साथ प्रयोग करते थे। गांधी जी का विश्वास था कि पारस्परिकता, सादगी तथा कठोर परिश्रम पर आधारित आश्रम जीवन एक ऐसे संयमवाद को विकसित करेगा जो समाज सुधार के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

महात्मा गांधी को आश्रमों को स्थापित करने की प्रेरणा प्राचीन भारतीय गुरूकुलों, तपोवनों, दक्षिण–अफ्रीकी ईसाई ट्रेपिस्ट संघों, स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशनों तथा गोखले के भारत सेवक समाज से मिली थी। इस दिशा में वे हेनरी थोरों से भी प्रभावित थे जिन्होंने ने ''वानडेन'' में ऐसा ही एक आश्रम बनाया था। गांधी सत्य अहिंसा पर आधारित एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे, जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकें।

पुराने जमाने में आश्रम धार्मिक होते थे। जैसे मन्दिरों के साथ में संस्कृत पढ़ने के आश्रम या विद्यालय थे, वैदिक लोगों की पाठशालाओं, बौद्धों के बिहार, संघाराम या मुसलमानों के ''खानकाह'' या ईसाईयों के हर्मिटेज आदि। बाद में सामाजिक सुधार के उद्देश्य से भारत में आश्रम बनें, मिशनरियों, ''

सेमिनरी'', ''डार्मिटेरी'' के ढंग पर – ''अनाथ आश्रम', 'विधवा आश्रम', 'अंध आश्रम' आदि। कोई भी ऐसी बस्ती, जो भीड़–भाड़ और शहर के शोर से दूर एक ही आदर्श को लेकर बनायी जाय वह आश्रम है जैसे योगाश्रम, बीमारी के लिए ''सैनीटोरियम'' या प्राकृतिक चिकित्सालय आदि।

गांधी जी के आश्रमों की इन सब आश्रमों से अलग विशेषता थी–

1. वह सिर्फ एक धर्म के लोगों के लिए नहीं था। सबकी प्रार्थना वहां होती थी।
2. वह सिर्फ रोगियों या विकलांगों के लिए नही था। चिकित्सालय भी वहां था।
3. वह सिर्फ पढ़ने–पढ़ाने का स्थान नहीं था। तालीमी संघ का मुख्यालय भी वहां था। वह सिर्फ स्वयं सेवकों को या सत्याग्राहियों को प्रशिक्षित करने का स्थान नहीं था।
4. वह सिर्फ बूढ़े लोगों का वृद्धाश्रम या विश्राम स्थान नहीं था। वहां कई बड़े नेता जैसे राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य नरेन्द्र देव आदि विश्राम करने भी जाते थे।
5. वह केवल बड़े आदमी का मुख्य कार्यालय और अतिथिशाला नहीं था। वहां बापू के कई मेहमान देशी विदेशी आकर रहते थे।

फोनिक्स आश्रम

जब गांधी 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये थे तो वहां उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका की समस्याओं के सम्बन्ध में संघर्ष करते करते उन्होंने अपने आपको दो दशकों के लम्बे प्रवास काल में एक धनाढ्य अंग्रेजी दाँ वकील से एक सफल नेता बना दिया। 1903 में गांधी जी ने ''इण्डियन ओपिनियन'' समाचार पत्र के माध्यम से भारतीय समुदाय की सेवा करने और उसे संगठित करने का निर्णय लिया। गांधी जी ने डरबन में पहुंचने पर ''इण्डियन ओपिनियन'' समाचार पत्र को सहकारी आधार पर चलाने का विचार किया और प्रेस तथा उसके कर्मचारियों के लिए एक कृषि फार्म खरीदा और प्रेस का काम शुरू हुआ। इस नेटाल की सुन्दर भूमि को गार्डन कालोनी का नाम दिया गया।

सन् 1904 में ''इण्डियन ओपिनियन'' प्रेस को डरबन से फोनिक्स आश्रम में स्थानान्तरित कर दिया गया। इस काम में कुछ भारतीय कारीगरों जिन्होंने बोअर युद्ध में काम किया था गांधी जी की मदद की। सम्पूर्ण फोनिक्स आश्रम में सहयोग का ऐसा वातावरण बना कि समाचार पत्र स्वावलम्बन के आधार पर नियमित रूप से छपने लगा। समाचार पत्र के माध्यम से शिक्षा, प्रचार प्रसार तथा जनहित से सम्बन्धित कार्यों का सम्पादन भी होता रहा।

इस काम में गांधी जी के प्रमुख सहयोगी मिस्टर वेस्ट तथा उनके भतीजे मगनलाल गांधी तथा ट्रान्सपाल किटिक के उपसम्पादक मिस्टर पोलक तथा जॉन कीर्डिस (जिन्होंने वाष्प सभागार का निर्माण किया थे। गांधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह की समाप्ति के बाद फोनिक्स तथा ''इण्डियन ओपिनियन'' का स्वामित्व एक न्यास मंडल को सौंप दिया गया।

टॉलस्टाय फार्म (1910–1913)

टॉलस्टाय फार्म की स्थापना 1910 में हुयी। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के समय जब भारतीयों के रहने की समस्या आयी तो गांधी जी ने उन्हें बसाने के उददेश्य से टॉलस्टाय फार्म की स्थापना की थी। इस काम में गांधी जी की मदद केलनबाख ने की। उन्होंने जोहान्सबर्ग से 21 मील दूर 11 सौ एकड़ भूमि का एक फार्म खरीद कर गांधी जी को सौंप दिया था। गांधी जी तथा सत्याग्राहियों को बिना किसी किराये तथा बिना किसी धन के 1910 में तब तक के लिए दिया जब तक सत्याग्रह का संघर्ष समाप्त नहीं हो जाता।

इस फार्म का नामकरण भी स्वयं केलनबाख ने किया था। केलनबाख टॉलस्टाय से प्रभावित थे। टॉलस्टाय फार्म शोषण विहीन, ग्रामोन्मुख तथा कायिक श्रम की जीवन शैली पर आधारित था। सभी को दैनिक आवश्यकताओं को कम से कम रखने को कहा गया। सादा भोजन और श्रम को एक आधार के रूप में विकसित किया गया। टॉलस्टाय फार्म पर सत्याग्राहियों को कठोरता पूर्वक दैनिक गतिविधियों का नियमित रूप से पालन करना होता था। टॉलस्टाय फार्म के मूल मंत्र थे मेहनत, मितव्ययिता तथा आत्म निर्भरता। आश्रम में कोई नौकर नहीं रखा जाता था।

टॉलस्टाय फार्म गांधी जी को एक महान शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रस्तुत करता है। वे ऐच्छिक कार्य, ग्राम की प्रतिष्ठा, चरित्र निर्माण आदि पर प्रारम्भ से जोर देते रहे। गांधी जी ने टॉलस्टाय फार्म को शिक्षा सम्बन्धी प्रयोगों की आदर्श प्रयोगशाला बना दिया। उन्होंने स्वयं लिखा टॉलस्टाय फार्म पर इस ओर अधिक ध्यान दिया गया। आगे लिखते हैं कि टॉलस्टाय फार्म एक परिवार था जिसमें मेरा स्थान पिता का था। इस कार्य में केलनबाख, प्रागजी आदि गांधी जी की सहायता करते थे। आश्रम में हस्तकार्य, खाना बनाना, सफाई, चंदन के लकड़ी के उपकरण, बढ़ईगीरी सम्बन्धित आदि कार्य सिखाए जाते थे।

सेवाश्रम आश्रम, कोचरब

कोचरब अहमदाबाद के पास एक छोटा सा गांव है और आश्रम का स्थान इसी गांव में था। सन 1915 में इसकी आधारशिला रखी गयी। स्वयं गांधी जी ने भी अनुभव किया कि वे अपने जन्म स्थान वाले प्रान्त में रहकर अपनी मातृभषा के माध्यम से देशवासियों की अधिक सेवा कर सकते हैं। इस काल में गांधी जी की मदद अहमदाबाद के एक प्रसिद्ध वकील जीवन लाल देशाई जी ने की। जिन्होंने गांधी जी एवं उनके सहयोगियों के रहने लिए अपना बंगला दे दिया था। उसका नाम गांधी जी ने सेवाश्रम रखा। गांधी जी ने आश्रम के संचालन के लिए शीघ्र ही एक संविधान बनाया।

कोचरब में स्थापित सेवाश्रम में रहने वाले प्रत्येक आश्रमवासी को नियमों का पालन करना पड़ता था। वहां पर कोई भी नौकर नहीं होता। आश्रमवासियों को नौ संकल्प लेने होते थे। यथा सत्य, अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, विदेशी वस्तु का बहिस्कार, अभय एवं अस्पृश्यता। इन संकल्पों का विवेक पूर्ण ढंग से

पालन करना आवश्यक था। सभी सेवाश्रम वासियों को समान रूप से कताई, बुनाई, कृषि, गोपालन आदि से सम्बन्धित कार्य करने होते थे। गांधी जी ने आश्रम में अछूतों को कड़े विरोध के बावजूद सम्मिलित किया। सभी आश्रमवासी एक रसोंई में भोजन करते थे इस तरह रहने की कोशिश करते मानों एक ही कुटुम्ब के हों।

साबरमती आश्रम

साबरमती आश्रम भारत के गुजरात राज्य अहमदाबाद जिले के प्रशासनिक केन्द्र अहमदाबाद के समीप साबरमती नदी के किनारे स्थित है। इस नये स्थान पर कच्चे मकान, पाठशाला, भोजनालय, रसोंई घर, पुस्तकालय तथा हथकरघा कनातशाला आदि मगनलाल गांधी के निरीक्षण तथा देखरेख में बनवाये गये। आश्रम निश्चित कार्य पद्वति और नियमावली के अनुरूप कार्य करता था।

प्रातः सर्वधर्म धर्म प्रार्थना, आश्रम भजनावली एवं भजन और रामधुन और 7 दिन में एक बार गीता पारायण होता था। आश्रम में नौकर रखने का रिवाज था ही नहीं। शौचालय से भोजनालय तक सारा काम आश्रमवासी भाई बहन ही करते थे। गांधी जी स्वयं इन कार्यों में हिस्सा लेते थे। कताई, बुनाई, धुनाई, खेती, गौशाला, धर्मालय, शिक्ष आदि काम सभी आश्रमवासी करते थे। कोई काम छोटा और बड़ा नहीं था।

गांधी जी के लिए आश्रम एक प्रयोगशाला की भांति थे, जिनमें गांधी जी द्वारा अहिंसा के साथ प्रयोग किये गये। उन्होंने आश्रमवासियों के लिए अनेक व्रतों का विधान दिया था। उनमें निम्न महत्वपूर्ण थे – सत्य, अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अभय अस्पृश्यता–निवारण, शारीरिक श्रम, सहिष्णुता, स्वदेशी, अपरिग्रह, अस्तेय और अस्वाद। आश्रम में इन व्रतों के अतिरिक्त अनेक रचनात्मक कार्यक्रम भी आश्रम में संचालित होते थे, जिनका परिचय यंग इण्डिया पत्रों में मिलता है। कुछ महत्वपूर्ण निम्न हैं – कौमी एकता, अस्पृश्यता निवारण, मद्यनिषेध, खादी, ग्रामोत्थान, बुनियादी तालीम की दशा। यदि इनके अतिरिक्त कुष्ठ रोगी सेवा, प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण सफाई, गौ सेवा आदिवासियें का उत्थान व राष्ट्रभाषा का प्रचार, आर्थिक समानत, किसान व मजदूरों की उन्नति व जागृति रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रमुख भाग थे।

जिस प्रकार दक्षिण अफ्रीका के आश्रमों ने दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रहों में योगदान किया था उसी प्रकार सन 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में साबरमती आश्रम का महत्वपूर्ण योगदान था। 1930 में होने वाले डांडी अभियान में आश्रम के 78 सदस्यों ने अपनी निष्ठा एवं क्षमता के साथ प्रदर्शन किया। साबरमती आश्रम सामुदायिक जीवन को जो भारतीय जनता के जीवन से समानता रखता है, विकसित करने की प्रयोगशाला था। आश्रम में विभिन्न धर्मावलम्बियों में एकता, चर्खा, खादी एवं ग्रामोद्योग द्वारा जनता की आर्थिक स्थिति सुधारने और अहिंसात्मक असहयोग के द्वारा जनता में स्वतंत्रता की भावना जागृत करने के प्रयोग किये गये। आश्रम भारतीय जनता एवं भारतीय नेताओं के लिए प्रेरणा स्रोत तथा भारत के स्वतंत्रता संघर्ष से सम्बन्धित कार्यों का केन्द्र बिन्दु रहा है।

सेवाग्राम आश्रम

महात्मा गांधी का साबरमती आश्रम (गुजरात) दुनियाभर में प्रसिद्ध है लेकिन उतना ही प्रसिद्ध उनका सेवाग्राम आश्रम भी है। इस आश्रम की खासियत यह है कि गांधी जी ने अपने संध्या काल के अन्तिम 12 वर्ष यहीं बिताये। वर्धा नामक स्थान पर रमणीक लाल मोदी ने 14 जनवरी, 1921 को जो आश्रम स्थापित किया था, उसे गांधी जी के निर्देश पर विनोबा भावे ने संभाला। विनोबा भावे ने कोचरब एवं साबरमती आश्रम से प्रेरणा एवं प्रशिक्षण लेकर सेगांव (बाद में सेवाग्राम) में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की।

इस आश्रम का उद्देश्य गांधी जी ने ''ग्राम सेवा'' तथा ग्राम विकास रखा था। उन्होंने कहा कि यह आश्रम मौलिक रूप से रचनात्मक कार्यों के सम्पादन से सम्बन्धित होगा। राजनीति आदि के लिए इसमें कोई स्थान नहीं होगा। सेवाग्राम में महत्वपूर्ण लोगों के रहने के लिए अलग–अलग कुटियाएं स्थापित की गयी। जैसे आदि निवास, बापू कुटी और बापू दफ्तर, बाकुटी, आखिरी निवास, प्रार्थना भूमि, गांधी चित्र प्रदर्शनी, ''सेवाग्राम सेवकों के लिए'' आदि। गांधी जी इस आश्रम में रहकर ''हरिजन सेवा'' तथा ग्रामोद्योग के विकास आदि कार्यों में संलग्न रहे।

गांधी जी ने 1930 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की जिससे सवर्णों को अछूतों की सेवा के लिए संगठित किया जा सके। 1934 में अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ की स्थापना की। जिसका प्रबंध प्रसिद्ध गांधीवादी अर्थशास्त्री जे0सी0 कुमारप्पा के हांथ में था। खादी महाविद्यालय भी खोला गया। सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया गया। जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। 1937 में समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस योजना को लघु स्तर पर लागू भी किया गया। सेवाग्राम के विद्या मन्दिर में बुनियादी शिक्षा देने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का बुनियादी कार्यक्रम शुरू किया गया। अन्य प्रान्तों में भी ऐसे केन्द्र खोले गये उनका मुख्यालय सेवाग्राम में ''हिन्दुस्तानी तालिमी संघ'' के नाम से खोला गया। यह शिक्षण पद्वति ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित थी। आश्रम के रूप में सेवाग्राम का विकास एक योजनाबद्ध कार्यक्रम के तहत किया गया जिसने ग्राम पुर्ननिर्माण के विकास में गांधी जी के विचारों को जो मूलतः मानवतावादी थे, प्रयोगात्मक स्वरूप प्रदान करने का अवसर दिया।

शोध के उददेश्य

1. गाँधी जी के आश्रमों का सूक्ष्मता से अध्ययन करना।
2. विभिन्न आश्रमों के माध्ययम से गाँधी जी ने किस तरह मानव कल्याण के विभिन्न कार्य किये इस सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. गाँधी जी के आश्रम जीवन को किस तरह राजनीतिक कार्यो ने प्रभावित किया इसका अध्ययन करना।
4. इन आश्रमों का भारतीय स्वतत्रंता आन्दोलन के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

निष्कर्ष

गांधी जी के सभी आश्रमों में अहिंसा के विकासमान सिद्धान्त के आधार पर गांधी जी के समुदायवाद का विश्लेषण किया गया है। मानव विकास हेतु विकसित गांधी धारणा क्रान्तिकारी तथा मानवीय थी। परन्तु उसका मूल आधार कठोर संयमवाद था। गांधीजी की मान्यता थी कि मनुष्य की प्रकृति तथा वाह्य परिवेश से उसका सम्बन्ध विच्छेद असम्भव है। उन्होंने अपने आश्रमों में वही सब करने/ कराने का प्रयास किया। अर्थात शुद्ध भोजन, शुद्ध विचार और शुद्ध कार्य ही व्यक्ति में नैतिकता का विकास और न्यायपूर्ण समाज का सृजन कर सकते हैं। आधुनिक केन्द्रीयकृत राज्य के विरूद्ध गांधी जी ने सहकारी सामंजस्यपूर्ण स्वावलम्बी समाज की रचना का सन्देश दिया। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के सत्याग्रह आश्रमों का लक्ष्य वहां के भारतीय समाज के जीवन को ऊंचा उठाना था किन्तु भारत में विभाजित समाज में एक समग्री क्रान्ति करना उद्देश्य था। इसके लिए उन्होंने हिन्दू, इसाई, मुसलमान, फारसी, सिक्ख आदि सभी के विचार एवं भाव ग्रहण किये। वे शहर और गांव मजदूर तथा बुद्धिजीवी के बीच की खाई को मिटाना चाहते, किन्तु उनके गैर राजनीतिक कार्यों को उनके राजनीतिक कार्यों की व्यस्तता ने सफल नहीं होने दिया।

इन सबके बावजूद आश्रमों में खादी कार्यक्रम, बच्चों और प्रौढ़ों के लिए शिक्षा योजनाएं, सफाई कार्यक्रम, गौ संरक्षण, मलेरिया नियंत्रण इत्यादि कार्यक्रम सफलता पूर्वक किये गये थे। इनमें भाग लेने वाली महिलाएं व पुरूष उनके द्वारा संचालित राष्ट्रीय आन्दोलन में अगुवा बने रहे। इन्हीं में से अनेक लोग देश के अनेक भागों में बसकर ग्रामीण जीवन का उद्धार करने के लिए समर्पित हो गये।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *साबरमती वीकीपीडिया।*
2. *सेवाग्राम वीकीपीडिया।*
3. *डा0 माचवे, प्रभाकर – गांधी जी के आश्रम में (एन0सी0ई0आर0टी0 1991) पृष्ठ 6, 7*
4. *गांधी, एम0के0, आश्रम जीवन (नवजीवन प्रकाश अहमदाबाद 1962) पृष्ठ 5, 8*
5. *गांधी जी, एम0के0, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (नवजीवन, अहमदाबाद, 1938) पृष्ठ 188*
6. *थॉमसन, मार्क, गांधी एण्ड हिज आश्रम्स (पापुलर प्रकाशन, बाम्बे 1993) पृष्ठ 4, 47, 57–61*
7. *गांधी, एम0के0, हिन्द स्वराज (नवजीवन अहमदाबाद 1938) पृष्ठ 15–22*
8. *सिंह, बलवन्त, बापू का आश्रम (नवजीवन, अहमदाबाद 1972) पृष्ठ 5, 101,*
9. *पटेल, एम0एस0, दि एजूकेशनल फिलॉसफी ऑफ महात्मा गांधी (नवजीवन, अहमदाबाद 1953, पृष्ठ 46)।*
10. *नन्दा, बी0आर0, महात्मा गांधी (जार्ज एलन एण्ड उन्विन, बाम्बे 1965), पृष्ठ 91*
11. *डा0 कुमार, रवीन्द्र, गांधी मार्ग वाल्यूम 4, अंक 2, (राइटर्स च्वाइस 1960) पृष्ठ 122*
12. *गांधी, एम0के0, यंग इण्डिया 17 नवम्बर, 1921 (अहमदाबाद, गुजरात)*
13. *गांधी, एम0के0, हरिजन 6, सितम्बर, 1936 (अहमदाबाद, गुजरात)*
14. *प्रो0 शर्मा वी0एस0, डा0 शर्मा दत्त रामकृष्ण, डा0 शर्मा सविता – गांधी दर्शन के विविध आयाम (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 2017) पृष्ठ 24, 25, 27, 28, 55*
15. *गांधी, एम0के0, आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग (नवजीवन अहमदाबाद 1925) पृष्ठ 145, 251, 259, 15, 22*
16- *http://toys.com/arvindgupta/h-gandhi-*